प्रकरण (१८) 'मर्द और औरत की नमाज़ का फ़र्क़'

- " जिस तरह बालिग़ मर्द पर नमाज़ फ़र्ज़ है, इसी तरह बालिग़ औरत (स्त्री) पर भी नमाज़ फ़र्ज़ है."
- " हैज़ (मासिक स्त्राव-Menses) और निफ़ास (प्रसव के बाद जो खून आता है-Blood after delivery) की हालत में औरत को नमाज़ पढ़ना मना है. इन दिनों में औरत को नमाज़ माफ (Exempted) है और इन दिनों की नमाज़ की कज़ा भी नहीं."

(बहारे शरीअत, हिस्सा-२, सफ्हा-८२)

- "मर्द और औरत के नमाज़ पढ़ने के तरीक़े (पद्धति-Method) में भी फर्क़ है. वोह फर्क जे़ल (निम्न-Below) में मरक़ूम (आलेखित) है. क़ारेईने-किराम एक नज़र में मर्द और औरत की नमाज़ का फर्क़ आसानी से समज़ लेंगे.

कहां फर्क है	फर्क़ नंबर	मर्द (पुरूष-Male) के लिये क्या हुक्म है ?	औ़रत (स्त्री-Female) के लिये क्या हुक्म है ?
तकबीरे तहरीमा	(१)	◆ अपनी हथेलियां आस्तीन के बाहर रखे.	◆ अपनी हथेलियां आस्तीन या चादर के अन्दर छुपा कर रखे.
	(२)	◆ अपने दोनों हाथ कानों तक उठाए.	◆ अपने दोनों हाथ सिर्फ मूढों (Shoulder) तक उठाए.
क़याम	(१)	◆ नाफ (डुंटी-Nevel) के नीचे हाथ बांधे.	◆ पिस्तान(स्तन-Breast) के नीचे हाथ बांधे.

	(२)	◆ दायें हाथ की हथेली बायें हाथ की हथेली के जोड़ (Joint) पर रखे और छिन्गलियां (छोटी ऊंगली -Littlefinger) और अंगूठा (Thumb) को कलाई (Wrist)के इर्द गिर्द (फरते) हलक़ा (Round) की शक्ल में रखे और दायें हाथ की बीच की तीनों ऊंगलियों को बायें हाथ की कलाई की पुश्त पर बिछा दे.	◆ बायें हाथ की हथेली (Palm) को पिस्तान के नीचे रखकर उसकी पुश्त (Back) पर दायें हाथ की हथेली रखे.
रूकूअ्	(१)	◆ पूरा जुके, इस तरह कि अगर पीठ पर पानी का प्याला भर कर रख दिया जाए तो ठहेर जाए, इतनी पीठ बिछाए.	◆ सिर्फ इतना झुके कि हाथ घुटनों (Knee) तक पहुंच जाए. पीठ को झुका कर न बिछाए.
	(२)	◆अपना सर पीठ के महाज़ (समांतरParaller) में रखे, न नीचा झुकाए न ऊंचा.	◆ अपना सर पीठ के महाज़ से ऊंचा उठाए रखे.
	(३)	◆ हाथों पर टेक लगाए या'नी वज़न दे.	◆ हाथों पर टेक न लगाए या'नी वजन न दे.
	(४)	◆ घुटनों को हाथों से पकड़े.	◆ हाथों को घुटनों पर सिर्फ रखे और घुटने पकड़े नहीं

	(५)	◆ घुटनों पर हाथ रख कर ऊंगलियां खूब खुली हुई और कुशादा रखे.	◆हाथों की ऊंगलियां कुशादा न करे बल्कि मिली हुई रखे.
	(६)	◆ अपनी टांगे मुत्लक़ न झुकाए, बल्कि सीधी रखे.	◆ अपनी टांगे झुकी हुई रखे, मर्दों की तरह सीधी न रखे.
सजदा	(१)	◆ फैल कर और कुशादा हो कर सजदा करे.	◆ सिमट कर सजदा करे
	(२)	◆ बाज़ु को करवट से, पेट को रान से और रान को पिन्डलियों से जुदा रखे.	◆ बाज़ू को करवट से, पेट को रान से, रान को पिन्डलियों से, और पिन्डलियों को ज़मीन से मिलादे.
	(३)	◆ कलाइयां और कोहनियां ज़मीन पर न बिछाए बल्कि हथेलियां ज़मीन पर रखकर कलाइयां और कोहनीयां उपर को उठाए रखे.	◆ कलाइयां और कोहनियां ज़मीन पर बिछाए या'नी ज़मीन से लगाए.
जल्सा और क़ा'दा	(१)	◆ अपना बायां (LEFT) क़दम बिछा कर उस पर बैठे और दायां क़दम इस तरह खड़ा रखे कि तमाम ऊंगलियां (क़िब्ला की तरफ) हो.	◆ दोनों पांव दायीं तरफ निकाल दे और बायें (Left) सुरीन या'नी चूतर (कुला-Rump) के बल ज़मीन पर बैठे.

	(२)	◆ अपनी हथेलियां रान पर रखे और ऊंगलियां अपनी हालत पर छोड़ दे या'नी ऊंगलियां न कुशादा (खुली रखे) और न मिली हुई रखे.	◆ अपनी हथेलियां रान पर रखे और ऊंगलियां मिली हुई रखे.
आगे से गुज़रने वाले को मुतनब्बेह (सचेत) करना	(१)	◆ नमाज़ पढ़ रहा है और कोई शख़्स आगे से गुज़रे तो 'सुब्हानल्लाह' कहे कर उस गुज़रने वाले को मुतनब्बे या'नी सचेत -Circumspect करे.	◆ नमाज़ पढ़ रही है और कोई व्यक्ति आगे से गुज़रे तो हाथ पर हाथ मार कर मुतनब्बेह करे. इस को शरई इस्तेलाह में 'तस्फीक़' कहते हैं. या'नी औरत तस्फीक़ करे.
नमाज़े फज्र	(१)	◆ नमाज़े-फज्र में अस्फार तक ताख़ीर (विलम्ब-late) करना मुस्तहब है. या'नी इतना उजाला हो जाएकि ज़मीन रोशन हो जाए और आदमी एक दूसरे को आसानी से पहचान ले.	◆ फज्र की नमाज़ 'ग़ल्स' या'नी अव्वल वक़्त अंधेरे (Darkness) में पढ़े.
	(२)	◆ Nil	◆ औरत फज्र की नमाज़ मर्दों की जमाअ़त क़ाइम होने से पहले या'नी

			उजाला फैलाने से पहले पढ़े. बाक़ी तमाम नमाज़ों में मर्दों की जमाअ़त का इन्तेज़ार करे या'नी मर्दों की जमाअ़त हो जाने के बाद पढ़े.
नमाज़े जुम्आ व ईदैन	(१)	◆ मर्द पर जुम्आ की नमाज़ फ़र्ज़ है और ईदैन या'नी दोनों ईदों की नमाज़ वाजिब है.	◆ औरत पर जुम्आ व ईदैन की नमाज़ नहीं.

ज़रूरी तम्बीह और मसाइल

मस्अला

''औ़रत भी खड़ी होकर (Standing) ही नमाज़ पढ़े. जिन नमाज़ों में या'नी फ़र्ज़, वाजिब और सुन्नते-मोअक्केदा में मर्दों पर क़याम फ़र्ज़ है, उन नमाज़ों में औ़रतों पर भी क़याम फ़र्ज़ है. अगर बिला उ़ज़्रे-शरई उन नमाज़ों को बैठ कर पढ़ेगी, तो नमाज़ नहीं होगी.

मस्अला

''तमाम रकअ़तें खड़ी होकर पढ़े. एक रकअ़त खड़ी होकर और बाक़ी रकअ़ते बैठ कर पढ़ेगी, तो उन रकअ़तों में क़याम का फ़र्ज़ तर्क होगा, लिहाज़ा नमाज़ न होगी.''

नोट :

हमारी कुछ कम-इल्म मां बहेनें फर्ज़, वाजिब और सुन्नते-मोअक्केदा नमाज़ में भी तमाम या बा'ज़ (कुछ) रकअ़तें बैठ कर पढ़ती हैं. उनकी नमाज़ नहीं होती, लिहाज़ा ऐसी नमाज़ की कज़ा करें और आइन्दा के लिये तौबा करें और हमेशा खड़े होकर लाज़मी तौर पर नमाज़ पढ़ने की आ़दत डालें.

- '' शरई उज़्र के बग़ैर बैठ कर नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं.''
- ''क़याम या'नी खड़े होकर नमाज़ पढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ जो अहेकाम मर्दों के लिये हैं, वोह तमाम अहेकाम औरतों पर भी लाज़मी (अनिवार्य) हैं.''
- ''नफ़्ल नमाज़ बग़ैर किसी उज़्र (कारण-Reason) के भी बैठ कर पढ़ सकती हैं.